साहित्य अकादमी में ग़ज़ल संध्या आयोजित

नई दिल्ली। साहित्य अकादमी द्वारा मनाए जा रहे हिंदी पखवाड़े के दौरान बृहस्पतिवार को अनेक कार्यक्रमों के साथ ही राजभाषा मंच के अंतर्गत ग़ज़ल संध्या कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बीके. वर्मा 'शैदी', कमलेश भट्ट कमल, मीनाक्षी जिजीविषा एवं ओमप्रकाश यती ने अपनी-अपनी ग़ज़लें प्रस्तुत की।

कार्यक्रम की शुरुआत मीनाक्षी जीजिविषा ने अपनी ग़ज़ल से की। उनका एक शेर था -कमरा, खिड़की और दीवारों दर सुनते हैं, पत्थर के रोने को केवल पत्थर सुनते हैं।

ओमप्रकाश यती ने 'सोचो ऐसा कर पाना आसान है क्या, और दर्द छुपाकर मुस्कराना आसान है क्या शेर सुनाया।' कमलेश भट्ट कमल की एक ग़ज़ल का शेर था 'लोगों में अंग्रेजियत के सौ असर मौजूद हैं, हां गुलामी के हस्ताक्षर अभी भी मौजूद हैं।' अंत में वरिष्ठ रचनाकार बी.के. वर्मा 'शैदी' ने अपनी बात कही,' बौनों की बस्ती में हम ऊंचाई की बाते करते हैं।'

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के उपसचिव (प्रशासन) कृष्णा किंबहुने ने अतिथियों का स्वागत अंगवस्त्रम पहनाकर किया।